शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

एकात्म मानव दर्शन में मातृ शक्ति की केन्द्रीय भूमिका एवं पंच-परिवर्तन का स्त्री दृष्टिकोण

डॉ. अनुराधा शुक्ला
साहित्यकार/समाजसेविका

सारांश (Abstract)- पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानव दर्शन भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के समग्र विकास का दार्शनिक प्रतिमान प्रस्तुत करता है। यह शोध-पत्र एकात्म मानव दर्शन में स्त्री की केन्द्रीय भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि स्त्री केवल पारिवारिक इकाई की आधारशिला नहीं, अपितु सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण, नागरिक कर्तव्यबोध तथा राष्ट्र-निर्माण की प्रेरक शक्ति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंच-परिवर्तन (स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता एवं कुटुम्ब प्रबोधन) के परिप्रेक्ष्य में स्त्री की निर्णायक भूमिका को समकालीन उदाहरणों सहित विवेचित किया गया है।

बीज शब्द (Keywords)-एकात्म मानव दर्शन, स्त्री सशक्तिकरण, पंच -परिवर्तन, सामाजिक समरसता, भारतीय संस्कृति, राष्ट्र-निर्माण, कुटुम्ब प्रबोधन, स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य

1. भूमिका- पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय चिंतन परम्परा के उन दुर्लभ विचारकों में से हैं जिन्होंने मानव जीवन को शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के समन्वित रूप में देखा। उनका दर्शन व्यक्ति-केन्द्रित होते हुए भी समष्टि-केन्द्रित है। इस दर्शन की आत्मा 'समरसता' है, और इस समरसता की प्रथम साधिका स्त्री है। इस दर्शन के केंद्र में सबसे पहले 'व्यक्ति' है, और उस व्यक्ति की संवेदना, संस्कार और समरसता का आधार स्त्री ही है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने मनुष्य को शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप बताया। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि समाज तभी समरस होगा जब स्त्री-पुरुष दोनों समान रूप से सम्मानित, सशक्त और सक्रिय होंगे। एकात्म मानव दर्शन स्त्री को केवल परिवार की धुरी नहीं मानता, बल्कि राष्ट्र-जीवन की सृजनशील, परिवर्तनकारी और मार्गदर्शक शक्ति के रूप में स्थापित करता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को सदैव शक्ति, करुणा और सृजन का प्रतीक माना गया है। वैदिक काल की गार्गी–मैत्रेयी से लेकर आधुनिक भारत की वैज्ञानिक, साहित्यकार और राजनेत्री तक—हर युग में स्त्री ने समाज को दिशा दी है।हमारे घरों में 'स्व' का बोध सबसे पहले स्त्री ही जगाती है—यही भाव आगे जाकर समाज और राष्ट्र को संस्कारित करता है।आज विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय स्त्रियाँ अंतरिक्ष और रक्षा तक नेतृत्व कर रही हैं। कल्पना चावला, इसरो की महिला वैज्ञानिकों, टेसी थॉमस जैसी महिलाओं ने दुनिया को दिखाया कि भारत की वैज्ञानिक प्रगति का आधा आकाश स्त्रियों के हाथ में है। साहित्य में महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, नीरजा माधव, मालती जोशी— इन लेखिकाओं ने मानवीय संवेदना, संघर्ष और सौंदर्य को नई भाषा दी है। साहित्य में स्त्री की दृष्टि समाज की आत्मा का विस्तार करती है। समाज में स्त्री सदैव प्रथम शिक्षिका रही है। वह प्रेम, अनुशासन, नैतिकता और संवेदना के संस्कार देती है। समाज तभी उन्नत होता है जब स्त्री शिक्षित और सशक्त हो— यह एकात्म मानव दर्शन की मूल आधारशिला है।

राजनीति में भारतीय स्त्रियों ने अनूठा नेतृत्व दिया है।भारत की पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने यह सिद्ध किया कि संवेदनशीलता और दृढ़ निर्णय—दोनों को साथ लेकर चलना ही सच्चा नेतृत्व है। भाजपा की कई महिला नेता—निर्मला सीतारमण, स्मृति ईरानी, अनुप्रिया पटेल, महारानी विजयाराजे सिंधिया—आज नीति-निर्माण, प्रशासन और राष्ट्र-निर्माण की अग्रिम पंक्ति में खड़ी हैं। यह वही दृष्टि है जिसके अनुसार स्त्री केवल सहभागी नहीं, बल्कि दिशा देने वाली शक्ति है। मैं मध्यप्रदेश से आई हूँ। यह जनजातीय दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है । मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि जनजातीय समाज में स्त्रियाँ प्रकृति-संरक्षण, कला-संस्कृति और सामूहिक जीवन की अद्भुत प्रतिमूर्ति हैं। पद्मश्री तीजन बाई का पंडवानी को विश्व पटल पर लाना इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। उनके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि लोक-संस्कृति की धड़कन स्त्री ही है। आज जनजातीय स्त्रियों को शिक्षा, अवसर और मंच देकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। संघ और संगठन में भी स्त्रियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। राष्ट्र सेविका समिति तथा विभिन्न प्रेरणादायी संगठनों में महिलाएँ—

- **संस्कार निर्माण,**
- **समाज सेवा,**
- **कुटुम्ब प्रबोधन,**
- **और राष्ट्रचेतना जागरण**

का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। वे समाज में समरसता, एकता और कर्तव्य की भावना का प्रसार कर रही हैं-जो सीधे-सीधे एकात्म मानव दर्शन के आधार स्तंभ हैं। अब मैं राष्ट्र-निर्माण से जुड़े एक महत्वपूर्ण विचार-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 'पंच-परिवर्तन'—को स्त्री की भूमिका के साथ जोड़ना चाहूँगी। संघ मानता है कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण पाँच परिवर्तन से संभव है- और इन पाँचों में स्त्री की भूमिका अत्यंत निर्णायक है—

(1) स्व का बोध/स्वदेशी :-स्त्री ही घर से लेकर समाज तक स्वदेशी जीवनशैली, भाषा और संस्कार को संरक्षित करती है।

(2) नागरिक कर्तव्य :-कर्तव्य,अनुशासन और राष्ट्र-भावना बच्चों को सबसे पहले वही सिखाती है- वह कर्तव्य को केवल कहती नहीं,जीती है।

(3) पर्यावरण संरक्षण :-भारतीय स्त्री प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की सजीव प्रतीक है-जल, वृक्ष, भोजन, भूमि—सबके प्रति संवेदनशील।

(4) **सामाजिक समरसता :-**वह घर, समाज और समुदाय में संबंधों को जोड़ने वाली शक्ति है-वर्ग, जाति, भाषा और क्षेत्रीय विभाजनों को मिटाने वाली सबसे बड़ी धुरी।

(5) कुटुम्ब प्रबोधन : परिवार भारत की मूल इकाई है—और परिवार को संस्कारित, मूल्य-समृद्ध और एकजुट बनाकर चलाना स्त्री ही जानती है।इन्हीं पाँच परिवर्तनों से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है।प्रधानमंत्री के पंच-प्रण-विकसित भारत, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और कर्तव्य—इन सबको साकार करने में भी स्त्री की भूमिका सबसे आगे खड़ी है। आज भारत की महिला क्रिकेट टीम का विश्व-विजेता बनना, कला–संस्कृति में भारत गौरव जागरण की तेज़ लहर, ये सब दिखाते हैं कि भारतीय स्त्री विश्व-पटल पर नेतृत्व करने के लिए तैयार है। भारतीय संस्कृति में चरण-स्पर्श केवल परंपरा नहीं, बल्कि विनम्रता, संस्कार और जीवन-मूल्यों का स्वीकार है-और इन मूल्यों को पीढ़ियों तक जीवित रखने वाली शक्ति भी स्त्री ही है।

अंत में,स्त्री केवल परिवार की आधारशिला नहीं,बल्कि संस्कृति की वाहक, समाज की दिशा, विज्ञान की शक्ति, साहित्य की संवेदना, राजनीति का नैतिक नेतृत्व,और राष्ट्र के पुनर्निर्माण की केन्द्रीय ऊर्जा है। एकात्म मानव दर्शन स्त्री को राष्ट्र-निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति मानता है।स्त्री का सम्मान, उसकी शिक्षा, उसका सशक्तिकरण-भारत के उज्ज्वल भविष्य की अनिवार्य शर्त है।पंडित दीनदयाल जी का दर्शन बहुआयामी है जीवन के विविध विषयों पर व्यापक विचार उसमें देखने को मिलते हैं। मेरा यह प्रयास रहा है कि उनके दर्शन की विविध छवियां आज स्त्री जीवन के विविध पक्षों पर किस रूप में दिखाई पड़ रही हैं, उसकी एक रूपरेखा आपके सामने रख पाऊं। "एकात्म का शाश्वत पथ-पं. दीनदयाल उपाध्याय"जब पश्चिमी विचारों की आँधी मेंभारत की आत्मा डगमगाई,तब एक तपस्वी ने मौन में रहकर राष्ट्र की चेतना जगाई। नाम नहीं था केवल, वह एक साधना थे-पं. दीनदयाल उपाध्याय।उन्होंने कहा-मनुष्य केवल देह नहीं,केवल भूख और भोग नहीं,वह संस्कार है, संवेदना है,और समग्र जीवन की चेतना है।यही से जन्माएकात्म मानवदर्शन-न उधार का विचार,न आयातित दर्शन,यह तो भारत की मिट्टी से उपजास्वदेशी चिंतन है।व्यक्ति अकेला नहीं, वह परिवार से बंधा है,परिवार समाज से जुड़ा है,और समाज—राष्ट्र की आत्मा है।अर्थ हो, पर मर्यादा से,शक्ति हो, पर सेवा से, विकास हो,पर प्रकृति के संतुलन से-न भोग में डूबा मनुष्य, न त्याग से भागा हुआ,कर्तव्य में स्थित,समरसता से भरा हुआ।दीनदयाल जी ने बताया—राजनीति सत्ता नहीं,सेवा का संकल्प है, और शासन वही सार्थक हैजो अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।जहाँ नीति में नैतिकता हो,जहाँ शक्ति में करुणा हो,जहाँ अधिकार से पहले कर्तव्य की पूजा हो—वही राष्ट्रसच में सशक्त होता है।आज जब विश्व स्वार्थ और संघर्ष में उलझा है, तब एकात्म मानवदर्शन मानवता का आश्वासन बनता है। यह कहता है-"मैं" नहीं, "हम" ज़रूरी है, प्रतिस्पर्धा नहीं, समरसता ज़रूरी है। दीनदयाल जी,आप विचार नहीं—पथ हैं,आप शब्द नहीं—सत्य हैं, आप दर्शन नहीं—भारत की जीवंत चेतना हैं। जब तक इस धरा परसंस्कार की साँस बहेगी,जब तक "मैं" से पहले "हम" की भावना रहेगी—एकात्म मानवदर्शनयुग–युग तक भारत कामार्गदीप बना रहेगा।

उपसंहार-एकात्म मानव दर्शन के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि स्त्री केवल पारिवारिक संरचना की आधारशिला नहीं, बल्कि राष्ट्र-चेतना की संवाहिका है। पंच-परिवर्तन के पाँचों आयामों में स्त्री की भूमिका निर्णायक है—वह स्वदेशी संस्कारों की रक्षक, नागरिक कर्तव्य की प्रेरक, पर्यावरण की संरक्षिका, सामाजिक समरसता की सेतु-निर्माता और कुटुम्ब प्रबोधन की प्रमुख सूत्रधार है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन स्त्री को सशक्तिकरण के आधुनिक विमर्श से कहीं आगे, उसे भारतीय संस्कृति की जीवंत चेतना के रूप में प्रतिष्ठित करता है। अतः स्त्री का सम्मान, उसकी शिक्षा और उसका नेतृत्व—भारत के समग्र, संतुलित और समरस विकास की अनिवार्य शर्त है।मौलिक कविता"एकात्म की स्त्री-चेतना"घर की देहरी से उठती वह,संस्कृति की धूप बनी,माटी की खुशबू में घुलकरराष्ट्र की रूप रेखा गढ़ती गई।वह केवल माँ नहीं-वह चेतना है, संवेदना है, और समरसता का पहला अक्षर है। स्वदेशी की साड़ी ओढ़े भविष्य की पाठशाला खोलती है, कर्तव्य की कलम से पीढ़ियों का चरित्र लिखती है। वन-उपवन उसकी गोद हैं, नदियाँ उसका आँचल, धरती से संवाद करती वह प्रकृति की सबसे कोमल भाषा है। जहाँ टूटते हैं भेद,जहाँ जुड़ते हैं मन—वहीं खड़ी मिलती है स्त्री-समाज की सेतु-रेखा बनकर। एकात्म मानव दर्शन की मौन साधना में वह दीप है- जो जलकर नहीं, जगाकर उजाला करता है।

संदर्भ:-

1. उपाध्याय, पं. दीनदयाल — एकात्म मानव दर्शन, भारतीय विचार केन्द्र, नई दिल्ली।
2. उपाध्याय, पं. दीनदयाल — राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, सुरभि प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. उपाध्याय, पं. दीनदयाल — समग्र मानववाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. शर्मा, राजेन्द्र — राष्ट्र निर्माण में नारी शक्ति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. शास्त्री, कमला — भारतीय संस्कृति में नारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. वर्मा, महादेवी — श्रृंखला की कड़ियाँ, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
7. अग्रवाल, सुमिता — स्त्री सशक्तिकरण : भारतीय परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. सिंह, विनोद — पंच परिवर्तन और भारतीय समाज, सुरभि प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. गुप्ता, मधु — भारतीय परम्परा में कुटुम्ब व्यवस्था, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
10. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ — पंच परिवर्तन : राष्ट्र पुनर्निर्माण का मार्ग, भारतीय विचार केन्द्र, नई दिल्ली।